पाठ 11

दिल्ली सल्तनत

आइए सीखें

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना।
- दिल्ली सल्तनत के विभिन्न वंशों का राज्य विस्तार।
- प्रमुख शासकों के शासन की विशेषताएँ।

हम पढ़ चुके हैं कि मोहम्मद गोरी भारत के उत्तरी हिस्सों पर अपना अधिकार स्थापित कर चुका था। वह स्वयं गोर (मध्य एशिया की रियासत) में रहता था तथा अपने विजित प्रदेशों पर शासन चलाने के लिए अपने गुलाम अधिकारियों को नियुक्त करता था। उन दिनों मध्य एशिया में प्रथा थी कि युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण देकर सुल्तान को बेच दिया जाता था। ये सुल्तान के गुलाम कहलाते थे। पश्चिमोत्तर भारत के विजित प्रदेशों का गवर्नर ऐसा ही एक गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक था।

गोरी की मृत्यु के पश्चात् ऐबक ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी लाहौर थी। उसे स्वतन्त्र शासक के रूप में सन् 1208 ई. में मान्यता मिली, यहीं से दिल्ली सल्तनत का शासन आरम्भ होता है।

गुलाम वंश (1206-1290 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक गुलाम वंश का संस्थापक था। मोहम्मद गोरी के प्रतिनिधि के रूप में उसने हाँसी, अजमेर, दिल्ली, मेरठ, बुलन्दशहर, कन्नौज, अलीगढ़, रणथम्भौर, गुजरात पर विजय प्राप्त की थी।

सुल्तान के रूप में उसने गजनी के शासक एल्दौज के साथ कूटनीतिक प्रयासों से अपने राज्य की रक्षा की। सिन्ध और मुल्तान के शासक कुबैचा की बढ़ती हुई शक्ति का दमन किया। बंगाल और बिहार के शासक को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया।

कुतुबुद्दीन ऐबक को भवन निर्माण में रूचि थी। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार, कुव्बत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में 'अढाई दिन का झोपड़ा' का निर्माण कराया। ऐबक को 'लाखबख्श' के नाम से भी जाना जाता है।

शिक्षण संकेत

- शिक्षक पाठ का अध्ययन पूर्व में करके कहानी के रूप में पाठ के मुख्य बिन्दुओं को सुनाएँ।
- मानचित्र की सहायता से शासकों के राज्य विस्तार को स्पष्ट करे।
- विभिन्न वंशों की तालिका बनवाएँ।

कुतुबुद्दीन की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र आरामशाह गद्दी पर बैठा, किन्तु अयोग्य होने के कारण दिल्ली के नागरिकों ने प्रधान काजी की सलाह से ऐबक के दामाद इल्तुतमिश को सिंहासन पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया। आरामशाह परास्त हुआ उसका वध कर दिया गया और इल्तुतमिश दिल्ली का सुल्तान बना।

चित्र क्र.-29: कुतुबमीनार

इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)

इल्तुतमिश को उत्तरी भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। गद्दी पर बैठने के पश्चात उसे आन्तरिक और बाहरी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसने अमीर सरदारों के विद्रोह का दमन किया जिसमें प्रमुख थे कुबैचा, ऐल्दौज एवं बंगाल के विद्रोही शासक। जालोर और रणथम्भौर के शासक जो ऐबक की मृत्यु के पश्चात स्वतन्त्र हो गए थे, उनकी बढ़ती हुई शक्ति का दमन किया। मंगोल आक्रमण से अपने राज्य की रक्षा की। 1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

- **इल्तुतमिश ने अरबी प्रकार का टंका (तनका) सिक्का चलाया।**
- **सन् 1229 ई. में इल्तुतमिश को बगदाद के खलीफा द्वारा खिलअत (अभिषेक-पत्र) प्राप्त हुई, जिसमें उसे हिन्दुस्तान के सुल्तान की उपाधि दी गई थी।**
- **इल्तुतमिश ने 40 तुर्की अमीरों और गुलामों के दल को संगठित किया जो राज्य की शक्ति का प्रमुख आधार स्तम्भ था।**

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

इल्तुतमिश के पुत्र अयोग्य थे, इस कारण उसने अपनी योग्य पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी बनाया। रजिया पुरुषों के समान वस्त्र पहन कर दरबार में बैठती एवं युद्धों का नेतृत्व करती थी।

- **पुत्रों के होते हुए, पुत्री को सिंहासन पर बैठाना मध्यकालीन इतिहास में एक नया कदम था।**

अमीर तुर्की सरदार इसे बर्दाश्त नहीं कर सके और उसके विरुद्ध षडयन्त्र और विद्रोह करने लगे। इनमें से सबसे सशक्त विद्रोह भटिंडा के गवर्नर अल्तूनिया के नेतृत्व में हुआ। जिसे दबाने के लिए रजिया ने लाहौर पर चढ़ाई कर दी। युद्ध में उसका सेनापति याकूत मारा गया एवं रजिया को बन्दी बना लिया गया। बाद में रजिया ने अल्तूनिया से विवाह कर लिया। दोनों ने मिलकर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी, जिसमें रजिया पराजित हुई, अन्ततः उसकी हत्या कर दी गई। रजिया के पश्चात बहराम शाह (1240-42 ई.), अलाउद्दीन (1242-46 ई.) और नासिरूद्दीन महमूद (1246-

65 ई.) तक सुल्तान बने किन्तु वे सभी अयोग्य थे।

बलबन (1266-1286 ई.)

इस समय 'चालीस तुर्की अमीरों' का दल अत्यधिक शक्तिशाली हो गया था। 1246 में इस दल ने इल्तुतमिश के पौत्र नासिरूद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया। महमूद ने बलबन नामक अमीर को अपना वजीर नियुक्त किया। संतानहीन नासिरूद्दीन की मृत्यु के पश्चात वजीर बलबन स्वयं सुल्तान बन गया।

- **बलबन ने बीस वर्ष तक नायब-ए-मुमलिकात (प्रधानमंत्री) पद पर रहकर तथा बीस वर्ष सुल्तान के रूप में निरंकुश शासन किया।**

बलबन ने सुल्तान बनते ही तुर्की अमीरों की शक्ति को नष्ट कर दिया क्योंकि वह सम्राट की निरंकुश शक्ति और प्रतिष्ठा में विश्वास रखता था। उसने स्वयं को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया और लोगों को सिजदा (घुटने पर बैठकर सिर को भूमि तक झुकाना) करने के लिए कहा।

बलबन ने अनेक विद्रोहों का दमन, भीषण नरसंहार और क्रूरता से किया। विद्रोहियों के प्रति अमानुषिक कठोर नीति के कारण उसे, 'लौह और रक्त' की नीति का सुल्तान कहा जाता है।

बलबन न्यायप्रिय शासक था एवं गुलामों के साथ अमानवीय व्यवहार करने वालों को कड़ी सजा देने का पक्षपाती था। उसने शक्तिशाली सेना एवं गुप्तचर विभाग का गठन किया, पुराने दुर्गों की मरम्मत करवायी तथा नए दुर्गों का निर्माण करवाया। दिल्ली के आस-पास के जंगलों को काटकर चौकियों का निर्माण करवाया। इस प्रकार उसने मंगोल और मेवातियों के आक्रमण से दिल्ली की रक्षा की और अपने साम्राज्य को विभिन्न आपदाओं से सुरक्षित रखा।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 ई.)

जलालुद्दीन खिलजी, खिलजी वंश का संस्थापक था। दिल्ली के सरदारों ने 1290 ई. में गुलाम वंश के सुल्तान कैकूबाद की हत्या कर उसे सुल्तान बनाया। जिस समय वह गद्दी पर बैठा उसकी आयु 70 वर्ष की थी एवं वह साहसपूर्ण कार्य करने में अक्षम था। जलालुद्दीन का भतीजा अलाउद्दीन अवध का सूबेदार था। उसने देवगिरि पर आक्रमण किया, उसे जीता तथा अपार धन दौलत लेकर लौटा। अत्यधिक महत्वाकांक्षी होने के कारण उसने अपने चाचा एवं ससुर जलालुद्दीन का वध किया और स्वयं गद्दी पर बैठ गया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

अलाउद्दीन साम्राज्य विस्तार की नीति में विश्वास रखता था। वह विश्व विजेता बनना चाहता था तथा अपने को दूसरा सिकन्दर (सिकन्दर-ए-सानी) कहता था। उसने गुजरात, राजस्थान, उज्जैन,

चन्देरी एवं मांडव पर विजय प्राप्त की। उत्तर भारत में विजय प्राप्त करने के बाद मलिक काफूर के नेतृत्व में दक्षिण भारत के देवगिरि, वारंगल, द्वारसमुद्र के राजाओं को पराजित किया। मंगोलों ने कई बार आक्रमण किए जिन्हें वह रोकता रहा।

सैनिक सुधार- अलाउद्दीन की विजय का श्रेय उसकी सुसंगठित सेना को दिया जाता है। सैनिकों की नियुक्ति उनकी योग्यता के आधार पर की जाती थी। सैनिकों के रूप-रंग,कद-काठी का पूर्ण विवरण रखा जाता था।

मानचित्र क्र.-3: अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्य

उसने सैनिकों को नगद वेतन देने की प्रथा को अपनाया तथा घोड़ों को दागने की व्यवस्था की। पुराने किलों की मरम्मत करवाई तथा नए किलों का निर्माण कराया।

बाजार नियन्त्रण- अलाउद्दीन ने मंगोल आक्रमण से राज्य की सुरक्षा तथा साम्राज्य विस्तार के लिए बड़ी सेना रखना आवश्यक समझा। इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता थी। अतः उसने बाजार नियन्त्रण लागू किया। कुशल तथा ईमानदार कर्मचारियों की नियुक्ति की, जो व्यापारियों पर नियन्त्रण रखते थे। वस्तुओं की कीमतें निश्चित कर दी गई। दुकानदारों द्वारा बाजार के नियमों का पालन न करने पर कठोर दण्ड दिया जाता था। बाजार भाव में निगरानी रखने के लिए गुप्तचरों की व्यवस्था थी। सरकारी गोदाम स्थापित किए गए। अकाल पड़ने पर गोदामों से खाद्यान्नों की पूर्ति की जाती थी।

राजस्व नीति- उसने भूमि के माप के आधार पर लगान का निर्धारण किया। उपज का आधा हिस्सा भूमि राजस्व के रूप में तय किया। इसके अतिरिक्त चारागाह कर, आयात निर्यात, जजिया, खम्स, जकात आदि करों में वृद्धि की।

1316 ई. में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई। 1320 ई.में गयासुद्दीन तुगलक ने खिलजी वंश के अंतिम शासक नासिरउद्दीन खुसरोशाह की हत्या करके स्वयं को सुल्तान घोषित किया।उ

तुगलक वंश (1320-1414 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

तुगलक वंश का संस्थापक गाजी मलिक था जो गयासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा। गयासुद्दीन तुगलक ने अलाउद्दीन खिलजी की कठोर नीतियों के स्थान पर उदार नीति अपनाई तथा राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने दिल्ली में तुगलकाबाद नगर की स्थापना की।

मोहम्मद-बिन-तुगलक (1325-1351 ई.)

गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र जूना खाँ मोहम्मद-बिन-तुगलक के नाम से उत्तराधिकारी बना। उसने राज्य की समस्याओं का समाधान किया।

मोहम्मद तुगलक की योजनाएँ- सुल्तान ने साम्राज्य की प्रगति और सुव्यवस्था के लिए नवीन योजनाएँ चलाई, उसकी मुख्य योजनाएँ इस प्रकार थी :—

राजधानी परिवर्तन- सुल्तान ने दिल्ली के स्थान पर, दक्षिण में देवगिरि, जिसका नाम दौलताबाद था, को अपनी राजधानी बनाया। दिल्ली निवासियों को दौलताबाद जाने के कठोर आदेश दिए। रास्ते के कष्ट और वहां की जलवायु दिल्लीवासियों को रास नहीं आई। पाँच वर्ष के भीतर राजधानी को पुनः दिल्ली स्थानांतरित करना पड़ा।

- **मोहम्मद तुगलक के शासन काल में इब्नबतूता नामक मोरक्को का यात्री भारत आया था। पहले उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया तथा बाद में राजदूत की हैसियत से चीन भेज दिया गया।**

ताँबे की मुद्रा का प्रचलन- उस समय विश्व में चाँदी उत्पादन में कमी आ गई थी। सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे के सिक्कों को चलाने का आदेश दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बाजार में भारी मात्रा में जाली सिक्के आ गए। इससे व्यापार और वाणिज्य में अव्यवस्था फैल गई और उसे पुनः चाँदी के सिक्के चलवाने पड़े।

दोआब में कर वृद्धि- राज्य की आय बढ़ाने के लिए सुल्तान ने गंगा और यमुना के बीच समृद्ध और उर्वरक भूमि 'दोआब' में कर बढ़ा दिया। जिस समय यह कर लगाया गया उस समय वहाँ अकाल पड़ा हुआ था, जिससे लोगों में भारी असन्तोष फैल गया।

सुल्तान द्वारा चलाई गई सभी योजनाएँ उचित क्रियान्वयन के अभाव में असफल रहीं। 1351 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)

मोहम्मद तुगलक की मृत्यु के पश्चात फिरोजशाह तुगलक सुल्तान बना। उसने अमीर तथा उलेमाओं को सन्तुष्ट करने का प्रयास किया। इस्लाम के नियमों के अनुसार शासन चलाया। उसने जजिया को एक अलग कर बनाया तथा ब्राह्मणों पर भी लागू किया। उसके शासन की मुख्य विशेषता लोककल्याणकारी कार्य थे।

- उसने हिसार, फिरोजाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर आदि नए नगर बसाये।
- सराय, जलाशय, अस्पताल, बगीचा तथा पुलों का निर्माण करवाया।
- दीवान-ए-खैरात विभाग की स्थापना की जो विधवाओं और अनाथों की सहायता करता था।

फिरोजशाह की मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी अयोग्य होने के कारण सल्तनत सिमट कर स्थानीय सूबों जैसी रह गई। इस वंश का अन्तिम शासक नासिरूद्दीन था। इसके शासनकाल में मंगोल शासक तैमूरलंग ने भारत पर आक्रमण किया। उसने सन् 1398 ई. में दिल्ली पहुँच कर नगर को लूटा और कत्लेआम करवाया। 1399 ई. में वह वापस लौट गया।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

तुगलक वंश के अन्तिम सुल्तान की मृत्यु के पश्चात खिज्र खाँ जिसे तैमूरलंग ने गवर्नर नियुक्त किया था, उसने दिल्ली पर अधिकार कर सैय्यद वंश की नींव रखी। इस वंश का अन्तिम शासक आलमशाह था। 1451 में दिल्ली के अमीरों ने पंजाब के अफगान शासक बहलोल लोदी को आमन्त्रित कर सिंहासन पर बैठा दिया।

लोदीवंश (1451-1526 ई.)

बहलोल लोदी (1451-1489 ई.)

बहलोल लोदी ने साम्राज्य को संगठित करने का प्रयत्न किया। बहलोल लोदी के पश्चात उसका पुत्र सिकंदर लोदी (1489-1517) सुल्तान बना। उसने अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर आगरा को बनाया। सिकन्दर लोदी ने प्रजा की भलाई और राज्य को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया।

इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.)

लोदी वंश का अन्तिम शासक इब्राहिम लोदी था। अफगान सरदारों ने अन्तिम लोदी सुल्तान का बड़ा विरोध किया और काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया। 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया। इब्राहिम लोदी युद्ध में मारा गया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का अन्त हुआ।

सल्तनत के पतन के पश्चात नए-नए छोटे राज्यों का उदय हुआ। बंगाल, गुजरात, मालवा, मेवाड़, मारवाड़, जौनपुर, विजयनगर, कश्मीर, बहमनी आदि। इनमें से विजयनगर तथा बहमनी राज्यों का इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

बहमनी राज्य- बहमनी राज्य की स्थापना सन् 1347 ई. में अलाउद्दीन बहमन शाह ने की थी। बहमनी राज्य के अन्तर्गत कृष्णा नदी तक का सम्पूर्ण उत्तरी दक्कन आता था। इस वंश का महान शासक फिरोजशाह था। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में बहमनी राज्य पाँच भागों में विभक्त हो गया— बीदर, बेरार, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर।

विजयनगर- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर, और बुक्का नाम के दो भाइयों ने की थी। विजयनगर साम्राज्य कृष्णा नदी के दक्षिण तट तक फैला था और विजय नगर (कर्नाटक की हंपी) उसकी राजधानी थी। इस राज्य के प्रमुख शासक देवराय प्रथम, देवराय द्वितीय तथा कृष्णदेव राय थे।

विजयनगर और बहमनी शासकों में रायचुर दोआब को लेकर संघर्ष होते रहे। इस समय में कई विदेशी यात्री भारत आए, जिसमें इटली के निकोलोकोंटी, इरानी राजदूत अब्दुर्रज्जाक, पुर्तगाल के डोमिगों के नाम उल्लेखनीय है। इन यात्रियों ने अपने यात्रा वर्णन में विजयनगर के वैभव व विस्तार के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है।

दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण

1. **शासन व्यवस्था की दुर्बलता-** दिल्ली सल्तनत में योग्य शासकों का अभाव था। उन्होंने मजबूत शासन प्रणाली कायम करने की कोशिश नहीं की। उनका शासन सैनिक शक्ति तथा लूटमार पर टिका हुआ था। प्रान्तीय शासकों पर केन्द्रीय सरकार का नियन्त्रण मजबूत नहीं था।
2. **उत्तराधिकारी के निश्चित नियम का अभाव-** एक सुल्तान की मृत्यु के पश्चात गद्दी के लिए झगडा शुरु हो जाता था। जो व्यक्ति अधिक शक्तिशाली होता था, वह सुल्तान बन जाता था।
3. **आपसी फूट-** मुसलमानों में धार्मिक एकता तो थी किन्तु वे विभिन्न नस्लो, धर्मों, जातियों और कबीलों के थे, इसलिए उनमें आपस में प्रतिस्पर्द्धा रहती थी।
4. **हिन्दुओं के साथ अत्याचार व स्थानीय शासकों का विरोध-** दिल्ली सल्तनत के अधिकांश शासकों ने धार्मिक असहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया। स्थानीय शासक इनको सहन न कर सके और वे सुल्तानों के विरूद्ध लगातार विद्रोह करते रहे।
5. **मोहम्मद तुगलक की भूलें-** मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलता ने साम्राज्य को कमजोर कर दिया। जनता में असन्तोष फैल गया।

6. तैमूर का आक्रमण- तैमूर आक्रमण से दिल्ली को धक्का लगा। उसने चारों ओर लूट पाट कत्लेआम मचा दिया। सल्तनत की सैनिक व आर्थिक व्यवस्था बिगड़ गई।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) आगरा को राजधानी बनाया था—

(अ) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (ब) सिकंदर लोदी ने

(स) बलबन ने (द) फिरोज शाह ने

(2) इब्नबतूता किसके शासनकाल में आया था—

(अ) मोहम्मद बिन तुगलक (ब) रजिया

(स) अलाउद्दीन खिलजी (द) इब्राहिम लोदी

(3) मोहम्मद तुगलक ने सिक्के चलवाये—

(अ) चांदी के (ब) सोने के

(स) जस्ते के (द) ताँबे के

(4) बलबन ने वजीर के रूप में शासन किया—

(अ) 10 वर्ष (ब) 20 वर्ष

(स) 30 वर्ष (द) 40 वर्ष

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) गुलाम वंश का संस्थापक ------ था।

(2) जौनपुर नगर ------ ने बसाया था।

(3) तैमूरलंग ने सन् ------ में दिल्ली पर आक्रमण किया।

(4) अलाउद्दीन ने दक्षिण भारत की विजय का कार्य ------ सेनापति को सौंपा।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) तुर्की सरदारों ने रजिया सुल्तान का क्यों विरोध किया?

(2) बलबन की ''लौह और रक्त'' की नीति को समझाइए।

(3) फिरोज तुगलक के किन्हीं दो सुधारों को लिखिए?

(4) विजयनगर राज्य के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) अलाउद्दीन खिलजी के सुधारों का वर्णन कीजिए?

(2) मोहम्मद तुगलक की महत्वाकांक्षी योजनाएँ क्या थी? उनमें वह क्यों असफल रहा।

(3) दिल्ली सल्तनत के पतन के कारणों का वर्णन कीजिए?

परियोजना कार्य–

- दिल्ली सल्तनत के शासकों की सूची बनाइए, साथ ही उनके काल को दर्शाइए।